डा० राम आशीष

असिस्टेंट प्रोफेसर - हिन्दी

विषय - काव्य लक्षण

कक्षा - बी० ए० - तृतीय वर्ष

प्रश्न पत्र शीर्षक - साहित्य सिद्धान्त और आलोचना

Scanned with CamScanner

काव्य लक्षण

'लक्षण' का अर्थ है 'विशेष धर्म'। काव्य लक्षण का अर्थ है काव्य का विशेष धर्म या गुण जो साहित्य के अन्य प्रकारों से काव्य का भेद दर्शाता है।

काव्य का स्वरूप हम विभिन्न आचार्यों और कवियों द्वारा दिये गये काव्य लक्षणों के आधार पर निरूपित करते है।

1- **भरतमुनि-** भरतमुनि ने 'नाट्यशास्त्र' में नाटक में काव्य स्थिति का स्पष्टीकरण करते हुए लिखा है-

मृदुललितपदाढ्यं गूढशब्दार्थहीनम
जनपद सुखबोध्यम् युक्तिमन्नृत्योज्यं
बहुरस कृत मार्गम् संधिसंधान युक्तम्
सः भवति शुभकाव्यम् नाटकेप्रेक्षकाणाम्

प्रारंभिक काल में काव्य नाटक का एक अंग था। नाटक में काव्यार्थ की प्रस्तुति अभिनय के द्वारा होती थी तथा काव्य में वह शब्दों द्वारा व्यक्त होता है। इसलिए नाट्य में अर्थ और क्रिया का योग रहता है। भरतमुनि ने लिखा है-

"अर्थक्रियोपेतम काव्यम्।"

Scanned with CamScanner

Date ________
Page ________

2- भामह -

भामह के अनुसार काव्य लक्षण -

"शब्दार्थौ सहितौ काव्यम् गद्यं पद्यं च तद्विधा।"

अर्थात शब्द शब्द और अर्थ के संयोग को काव्य कहा जाता है। गद्य और पद्य इसकी दो विधाएँ हैं। दूसरे शब्दों में कहा जाय तो शब्द और अर्थ सौन्दर्यता का सहभाव या सामंजस्य ही काव्य है।

3. आचार्य दण्डी

आचार्य दण्डी के अनुसार काव्य लक्षण -

"शरीरं ताव दिष्टार्थ - व्यवच्छिन्ना पदावली"

इष्ट अर्थ से युक्त पदावली काव्य शरीर है। यहाँ इष्ट अर्थ का अभिप्राय अलंकार जन्य आनन्द से है।

4- आचार्य वामन -

आचार्य वामन के अनुसार

"रीतिरात्मा काव्यस्य। विशिष्ट पद रचना रीतिः। विशेषो गुणात्मा।"

अर्थात रीति काव्य की आत्मा है। विशिष्ट पद रचना रीति है। यह विशिष्टता गुण से आती है।

Scanned with CamScanner

तात्पर्य यह कि गुण युक्त पद विन्यास ही रीति है जो काव्य की आत्मा है। वामन के पहले आचार्य हैं जो काव्य की आत्मा का अनुसंधान करते हैं।

5. आचार्य ~~आनन्दवर्द्धन~~ - कुंतक

"शब्दार्थौ सहितौ वक्रकविव्यापारशालिनि।
बन्धे व्यवस्थितौ काव्यं तद्विदाह्लादकारिणि॥"

वक्र कवि व्यापार से शोभित होने वाला तथा बुध जन को आह्लादित करने वाला शब्दार्थ सहित व्यवस्थित बन्ध काव्य कहलाता है। कुंतक ने काव्य को 'कवि व्यापार' माना है।

6- आचार्य मम्मट -
आचार्य मम्मट के अनुसार-

"तद्दोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृति पुनः क्वापि"

अर्थात ऐसा शब्दार्थ जो दोष रहित गुण युक्त हो कभी-कभी अनलंकृत होने पर भी काव्य कहलाता है।

7- आचार्य विश्वनाथ -
आचार्य विश्वनाथ के अनुसार

"वाक्यम् रसात्मकम् काव्यम्"

अर्थात रसयुक्त वाक्य को ही काव्य कहा जाता है।

Scanned with CamScanner

8. आचार्य जगन्नाथ -

आचार्य जगन्नाथ के अनुसार -

" रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यम् "

अर्थात रमणीय अर्थ का प्रतिपादन करने वाला शब्द ही काव्य है।

हिन्दी काव्य लक्षण

1. आचार्य केशवदास -

आचार्य केशवदास ने कविता के लिए रस, छन्द और शब्द सौन्दर्य के साथ-साथ अलंकार का होना आवश्यक मानते हैं -

" यद्यपि जाति सुलच्छनी, सुबरन सरस सुवृत्त।
भूषन बिनु न सोहई, कविता बनिता मित्त ।। "

2. चिन्तामणि के अनुसार -

" बत कहाउ रस मैं जु है कवित्त कहावै सोय "

अर्थात रस युक्त वाक्य काव्य है।

3. देव के अनुसार -

देव ने काव्य को पुरुष रूपक के रूप में स्पष्ट किया है।

" सबद जीव तिहि अरथ मन, रस मय सुजस शरीर
चलत वहै जुग छन्द गति, अलंकार गंभीर ।। "

classmate
Date
Page

अर्थात शब्द जीव है, अर्थ मन है, यश से युक्त यशस्वी उसका शरीर है। दोनों प्रकार के अर्थात वार्तिक और मात्रिक छन्द उसकी गति है।

4- आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के अनुसार -

"अंतःकरण की वृत्तियों के चित्र का नाम कविता है।"

5- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार -

"सत्वोद्रेक या हृदय की मुक्तावस्था के लिए किया हुआ शब्द विधान काव्य है।"

6 जयशंकर प्रसाद के अनुसार -

"काव्य आत्मा की संकल्पनात्मक अनुभूति है, जिसका सम्बन्ध विश्लेषण, विकल्प या विज्ञान से नहीं है। वह एक श्रेयमयी प्रेम रचनात्मक ज्ञान धारा है।"

7- सुमित्रानंदन पंत के अनुसार -

"कविता हमारे परिपूर्ण क्षणों की वाणी है।"

स्पष्टतः इन सारी परिभाषाओं को समग्र रूप में समझ कर ही काव्य के स्वरूप को समझा जा सकता है। काव्य का स्वरूप भाषा पक्ष, भाव पक्ष, अभिव्यक्ति कौशल व आत्मपक्ष इन सबका समवेत है।

Scanned with CamScanner